हीराबाई का यथार्थ स्वरूप

धर्मेन्द्र कुमार*

फणीश्वरनाथ रेणु आँचलिक कथा साहित्य के महान कथाकार हैं। उन्होंने आँचलिक कहानियों के माध्यम से अंचल की समस्त समस्याओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति दी है। अभिव्यक्ति की इसी प्रक्रिया में उन्होंने प्रेम संवेदना को लेकर कालजयी कहानी–तीसरी कसम अर्थात् मारे गये गुलफाम की रचना की है। उन्होंने इस कहानी में हिरामन एंव हीरबाई के बीच बनते–बिगड़ते प्रेम संबंधों का यथार्थपरक मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

हीराबाई तीसरी कसम कहानी की प्रमुख नारी पात्र है। उसने अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के माध्यम से लोगों के दिलो–दिमाग पर ऐसी पहचान बनाई, जो आज भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। हीराबाई बहुमुखी प्रतिभा की धनी व्यक्ति है। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व कई आयामों का जोड़ है, इन्हीं आयामों का सूक्ष्मासूक्ष्म विश्लेषण करने पर उसके यथार्थ स्वरूप की झलक दिखलाई पड़ती है।

हीराबाई अनुपम सौंदर्य की मल्लिका थी। उसके सौंदर्य की छटा निराली थी। इस निराले सौंदर्य में कई रंग मिले थे–जिसमें उसका रूप, उसकी हँसी, उसके दाँत, उसकी मुस्कुराहट, उसका खोया–खोया चेहरा सभी शामिल है। हीराबाई के सौंदर्य का सर्वप्रथम दीदार हिरामन को रात्रि के समय होता है–जब उसकी बैलगाड़ी में वह बैठी है। जैसे ही हीराबाई करवट लेती है वैसे ही उसके चेहरे पर चाँदनी फैल जाती है। जिस कारण उसका सौंदर्य बहुगुणित हो जाता है। उसके इस सौंदर्य का दीदार कर हिरामन चीखते–चीखते कहता है–अरे बाप ई तो परी है।[1] हिरामन को हीराबाई के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में सौंदर्य का दीदार होता है। जब हीरबाई बोलती है तब उसे उसकी आवाज, मन में मिश्री धोल देने वाली लगती है–अनदेखी औरत की आवाज ने हिरामन को अचरज में डाल दिया। बच्चों की बोली जैसी महीन, फेनूगिलासी बोली।[2] हिरामन हीराबाई के दाँत के सौंदर्य की तुलना बैलों के माला में पिरोये गये नन्ही–नन्ही चित्ती कौडियों से करता है। उसे लगता है कि हीराबाई के दाँत इन्हीं छोटी–छोटी नन्हीं–नन्हीं कौडियों के पाँत है। उसे हीराबाई की एक– एक अदा में सौंदर्य दिखाई पड़ता है। उसका बोलना–हँसना, खोया–खोया रहना सभी में अनुपम सौंदर्य की कशिश दिखाई पड़ती है। हीराबाई

***शोधार्थी (हिन्दी) एस. आर.एफ.हिन्दी विभाग पटना विश्वविघालय, पटना।**

की मुस्कुराहट के संदर्भ में साहित्यकार आलोचक भारत यायावर कहते है– उसकी सवारी मुस्कुराती है। ...मुस्कुराहट में खुशबू है। हीरबाई की आँखें गुजुर–गुजुर उसको हेर रही है। हिरामन के मन में कोई अजानी रागिनी बज उठी। सारी देह सिरसिरा रही है। हिरामन का मन पल–पल बदल रहा है। मन में सतरंगा छाता धीरे–धीरे खिल रहा है।[3] हीराबाई के रूप सौंदर्य का वर्णन आलोचक मधुरेश बिल्कुल नये अंदाज में करते हुई कहते हैं–हीराबाई के रूप–रस और गंध को जिस मोहक अंदाज में कहानी में बाँधा गया है, वस्तुतः वे ही तत्व रीतिकालीन उपमानों को नये सिरे से पुनर्जीवित करने का प्रयास करते हैं। हीराबाई के सौंदर्य वर्णन में कनुप्रिया से आश्चर्यजनक समानता है।[4]

हीराबाई स्वभाव से सहृदय भावुक नारी है। वह किसी को आहत करना या दिल दुखाना नहीं चाहती है। उसके इस स्वभाव के धेरे में सिर्फ मानव ही नहीं आता बल्कि सम्पूर्ण जीव–जन्तु के प्रति उसका यही भाव था। हिरामन जब अपने बैलों को दुआली से पीटता हुआ गाली देता है तब हीराबाई के अंदर का भाव विचार के रूप में स्वतः–स्फूर्त अभिव्यक्त होता है–अहा ! मारो मत![5] पुनः हिरामन जब अपने बैलों के साथ ऐसा करता है तब भी हीराबाई जोर देकर ऐसा ही कहती है – मारो मत धीरे–धीरे चलने दो। जल्दी क्या है।[6] इतना ही नहीं, जब हीराबाई फारबिसगंज पहुँचती है तब वह हिरामन एंव उसके साथियों से विदा तो लेती ही है साथ ही हिरामन के बैलों को भी सम्बोधित कर विदा माँगती है–

हीराबाई जाते–जाते रूक गई। हिरामन के बैलों को सम्बोधित करके बोली,

अच्छा, मैं चली भैयन!

बैलों ने, भैया शब्द पर कान हिलाए।[7].

हीराबाई की सहृदयता हिरामन के साथ गहरे दिखाई पड़ती है। वह उसे तनिक भी आहत नहीं करती, बल्कि उसका सम्पूर्ण ख्याल रखती है। वह हिरामन के स्वभाव पर मोहित हो जाती है। अल्पकालिक अवधि के मिलन में उसका अधिक प्रयास रहता था कि हिरामन को कैसे बहुत ज्यादा खुशी दिया जाय। इतना ही नही, वह हिरामन के साथ–साथ उसके मित्रों का भी ख्याल रखती है तभी तो भाड़ा देने के साथ–साथ उसे दच्छिना भी देती है। इतना ही नहीं वह उसके सभी दोस्तों के लिए मध्यम कोटि का पाँच पास दिलाती है–इस्स एक नही पाँच पास। चारो अठनिया ! बोली कि जब तक मेले में हो रोज रात में आकर देखना। सबका ख्याल रखती है। बोली कि तुम्हारे और साथी है, सभी के लिए पास ले जाओ।[8]

हीराबाई के स्वभाव में व्यवहारिकता का गुण कूट–कूट कर भरा हुआ है। उसकी व्यवहार कुशलता निहायत ही उच्च दर्जे की दिखाई पड़ती है। हालांकि

हीराबाई जिस पेशे से आती है उस पेशे की वजह से लड़कियों के व्यवहार में कुटिलता, धूर्तता आदि के गुण समहित हो जाते है, परंन्तु हीराबाई इस मामले में निष्कलंक दिखाई पड़ती है। जब हिरामन से उसकी मुलाकात होती है तब वह सर्वप्रथम श्भैयाश शब्द से उसे संबोधित करती है। उसका यह संबोधन आत्मीयता में रचा बसा अनुभूत होता है। इतना ही नहीं उसके इस आत्मीय संबोधन को उसके दोनों बैल भी महसूस करते है–''उसके दोनों बैल भी कान खड़े करके बोली को परखते है।[9] पुनः आपसी परिचय एंव धनिष्ठता के बाद उसे 'मीता' पुकारती है। मीता यानी मित्र–गहरी आत्मीयता से जन्मी मित्रता, मानो जन्मों–जन्मों की मित्रता हो। हीराबाई जिज्ञासु प्रवृत्ति की आत्मचेतस नारी है। वह ज्ञानी और ज्ञान का सम्मान करना जानती है। वह जिस कला एवं विधा से जुड़ी है उससे संबंधित किसी भी बातों पर उनकी पैनी नजर होती है। इस प्रकार की जानकारी की प्राप्ति के लिए वह कोई अभिमान नही रखती है। उसके लिए कोई भी ज्ञान न तो छोटा है और न ही बड़ा–उसी प्रकार वह ज्ञान के स्त्रोत का भी विभेद नहीं करती है। उसका इस प्रकार का स्वभाव निश्चय ही उसे प्रगतिशील बनाता है। इसी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण हीराबाई ग्रामीण संस्कृति की लोककथाओं के प्रति गहरी जिज्ञासा रखती है। वह हिरामन से कहती है–''क्यो मीता? तुम्हारी अपनी बोली में कोई गीत नहीं क्या ?[10] इसी प्रकार की जिज्ञासा की प्रवृत्ति हीराबाई के संदर्भ में कतिपय प्रसंगों में दृष्टव्य होता है।

हीराबाई का व्यक्तित्व सकारात्मक तत्वों का जोड़ है। जिसमें कृतज्ञता भी एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में उभरता है। हीराबाई स्वभाव से सहृदय तो है ही, साथ–ही–साथ वह कृतज्ञ भी है। यह कृतज्ञता उसके रोम–रोम में समाहित है। जब वह कृतज्ञता ज्ञापित करती है तब उसके अंदर का अणु–अणु सहज स्वभाविक रूप में झुक जाता है–उसमें कृत्रिमता का लेशमात्र भी आभास नही होता है। उसका कृतज्ञता ज्ञापन इतनी आत्ममीयता से भरा होता है कि सामने वाले को ऐसा एहसास होता है कि अपनी सम्पूर्ण थाती उस पर उड़ेल दे। जिसकी बानगी हम निम्न उद्धरण में देख सकते है–

- आप मुझे गुरूजी मत कहिए
- तुम मेरे उस्ताद हो। हमारे शास्तर में लिखा हुआ हैं एक अच्छर सिखानेवाला भी गुरू और एक राग सिखानेवाला भी उस्ताद।[11]

हीराबाई उच्च भारतीय संस्कारों से युक्त निश्छल स्वभाव की नारी पात्र है। यद्यपि यह नृत्य–गीत के माध्यम से लोगों का मनोरंजन करती है परंन्तु अपने व्यवहार में उच्च आदर्शें एंव संस्कारों को सदैव बनाये रखती है। चीजों को देखने–

समझने की गहरी संवेदना उसके पास थी, तभी तो वह हिरामन को परख लेती है कि वह नाम का ही हीरा नही है बल्कि सचमुच का हीरा है। गहरी आत्मीयता के क्षणों में व्यक्ति की अंतरात्मा एक दूसरे में धुल–मिल जाती है–जिस कारण व्यक्ति एक–दुसरे के समक्ष उन्मुक्त व्यवहार करता है। यही वजह है कि हीराबाई हिरामन के समक्ष दिल खोल कर हँसती है, उसके गीत–गाने पर उसका हौंसला बढाती है और उसके प्रति दिल की गहराइयों से सम्मान अभिव्यंजित करती है–भैया...मीता.. हिरामन...उस्ताद...गुरूजी...ये सारे तथ्य हीराबाई के अंदर अन्तर्निहित उच्च संस्कारों को द्योतित करता है। जिसकी प्रशंसा स्वयं रचनाकार इस रूप में करते है –

हीरबाई धाट की ओर चली गई गाँव की बहू–बेटी की तरह सिर नीचा करके धीरे–धीरे। कौन कहेगा कि कम्पनी की औरत है।...औरत नही, लडकी। शायद कुमारी ही है।[12] हालांकि हीराबाई उच्च संस्कारों से युक्त नारी है परन्तु हालात इसे बेगाने की भांति दर्दभरी जीवन जीने को मजबूर करता है–जिसे संदर्भित करते हुए डॉ0 हरिवंश नारायण ठाकुर कहते है–मिथिलांचल के लोकमन में रची–बसी महुआ धटवारिन की कथा हीराबाई में धटित होती है और हीराबाई बन जाती है–स्त्री मन की मर्मांतक पीड़ा। पेशे की विवशता और पुरूष समाज की सीमा रेखा में कैद हीराबाई की व्यथा–कथा भारतीय जीवन की आम नारी की भी कहानी है। उन्मुक्त रूप से नौटंकी कम्पनी में काम करने वाली भी अपनी इच्छा और आकांक्षाओं के साथ मुक्त नहीं है। वहाँ भी पुरूषों का ही सिक्का चलता है महुआ धटवारिन की तरह वह भी बिक गई है सौदागर के हाथ।[13]

हीराबाई मनोविज्ञान की गहरी समझ रखती थी। इस समझ के आलोक में वह व्यक्ति के चित्त में बैठे गहरे संस्कार को भली–भाँति देख पाती है। यही वजह है कि व्यक्ति से मिलने के दौरान ही वह उसके संदर्भ में अच्छे बुरे की धारण बना लेती है। तभी तो वह हिरामन को कुछ ही देर में समझ लेती है–हीराबाई ने परख लिया हिरामन सचमुच हीरा है।[14] वहीं दूसरी ओर जब हिरामन का मित्र लालमोहर हीराबाई से नजदीकी बढाना चाहता है तब वह उसे पहचानने से इंकार कर देती है–लालमोहर एक दिन अपनी कचराही बोली सुनाने गया था हीराबाई को हीराबाई ने पहचाना ही नही।[15] हीराबाई हीरामन के मनः स्थति को सदैव भाँप लेती है। इसलिए वह उसी की इच्छा के अनुरूप कार्य करती है ताकि इस भोले व भावुक मन को ठेस न लगे। इस छोटे समयांतराल में ही एक–दुसरे से मान–मनौव्वल करना, रूठना–मनाना निश्चय ही लोगों के अंतरतम को भिगा देता है।, हीराबाई अंत–अंत तक हिरामन को दुखी नहीं करना चाहती है। उस समय उसके अंदर चल रह मनोभावों को व्यंजित करते हुए भारत यायावर कहते है–हीराबाई हिरामन को छोड़कर जा रही है पर वह उसकी मनः स्थिति को अच्छी तरह समझती है। कहती

है तुम्हारा जी बहुत छोटा हो गया है क्यों मीता? महुआ धटवारिन को सौदागर ने खरीद जो लिया है गुरूजी।[16]

निष्कर्षतः—उपरोक्त तथ्यों के आलोक में हम पाते हैं कि हीराबाई उच्च संस्कारों से युक्त सहृदय नारी पात्र है। परिस्थितियाँ भले ही इसे कंपनी मे बाई जी का काम करने को विवश करती हो परंन्तु, वह अपने उच्च संस्कारों एंव आदर्शों से तनिक भी समझौता नहीं करती है। उसका यह संस्कार जिसमें सहृदयता, सौंदर्य व्यवहारिकता, कृतज्ञता, निश्छलता आदि समाहित है वह उसे सर्वकालिक प्रासंगिक बनाता है। उसका वह लालित्य पूर्ण प्रेम—जो असफल होते हुए भी सफल है, सदैव लोगों के दिलो—दिमाग में कायम रहेगा। उसके प्रेम की असफलता के लिए उसे जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है,—क्योंकि परिस्थितियाँ प्रेम के प्रतिकूल थी। इस प्रेम की असफलता को संदर्भित करते हुए भारत यायावर कहते हैं—तीसरी कसम में अनेक प्रकार की कथाएँ और धटनाएँ चलती हैं पर प्रेम का अंकुर जनम कर भी नही बढ़ता, क्योंकि नियति बोध को भारी पत्थर ने उसे दबोच रखा है।[17]

संदर्भ ग्रंथ

(1) तीसरी कसम अर्थात् मारे गये गुलफाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन पृ.—129

(2) वही पृ. 129

(3) आजकल पत्रिका, रेणु विशेषांक, अप्रैल 2016, पृ.— 12

(4) हिन्दी कहानी का विकासः मघुरेश, सुमित प्रकाशन पृ 90

(5) तीसरी कसम पृ. 129

(6) वही पृ. 130

(7) वही पृ. 144

(8) वही पृ. 145

(9) वही पृ. 129

(10) वही पृ. 136

(11) वही पृ. 140

(12) वही पृ. 134

(13) परिषद् पत्रिका, स्त्री विमर्श विशेषांक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् , पटना अप्रैल 2003 से मार्च 2004 पृ. 170

(14) तीसर कसम पृ. 130

(15) तीसर कसम पृ. 150

(16) आजकल पत्रिका रेणु विशेषांक अप्रैल 2016 पृ. 13

(17) वही पृ. 12